भगवान श्रीराम के 36वें वंशज महाराजा अग्रसेन : सदियों पुराना बिजनेस मंत्र, आज भी प्रासंगिक

भगवान श्रीराम के 36वें वंशज महाराजा अग्रसेन जी केवल महान राजा ही नहीं, बल्कि दूरदर्शी समाज सुधारक और आर्थिक सोच के प्रेरणास्रोत माने जाते हैं। उनकी विचारधारा में व्यापार के साथ समाज, समृद्धि के साथ सेवा और सफलता के साथ सहयोग को महत्व दिया गया। महाराज अग्रसेन जी के 18 पुत्रों से जुड़े 18 गोत्र—ऐरन, बंसल, बिंदल, भंदल, धारण, गर्ग, गोयल, गोयन, जिंदल, कंसल, कुच्छल, मधुकुल, मंगल, मित्तल, नागल, सिंघल, तायल और तिंगल—आज भी अग्रवाल समाज की पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।महाराजा अग्रसेन जी की 'एक ईंट और एक रुपया' की परंपरा अपने समय में सामूहिक आर्थिक सहयोग का अनूठा उदाहरण थी। आज की भाषा में इसे Community Support, Networking और Collective Growth की सोच से जोड़ा जा सकता है। वहीं जीव हत्या और बलि प्रथा के विरोध तथा अहिंसा और जीवदया के संदेश ने उनकी विचारधारा को मानवीय मूल्यों से जोड़ा।

महाराजा अग्रसेन जी ने यज्ञ में पशु बलि एवं जीव हिंसा का विरोध किया और अहिंसा, करुणा तथा जीवों के प्रति दया का मार्ग अपनाया। इसलिये महाराज ने क्षत्रिय धर्म त्यागकर वैश्य धर्म को अपनाया, तब ही से अग्रवाल, वैश्य कहलाने लगे।

महाराजा अग्रसेन जी ने माता लक्ष्मी की कठोर तपस्या एवं अनन्य आराधना की। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर माता लक्ष्मी ने उन्हें अग्रवंश की कुलदेवी बनने का वरदान भी दिया।

आज के दौर में डॉ. विवेक बिंद्रा और संदीप माहेश्वरी जैसे लोकप्रिय मोटिवेशनल स्पीकर्स भी महाराज अग्रसेन जीवन-दर्शन, उद्यमिता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक मूल्यों से जुड़े विचारों को युवाओं और बिजनेस जगत तक पहुंचाते रहे हैं। इसी आधुनिक संदर्भ में महाराजा अग्रसेन जी के सिद्धांतों को Leadership, Entrepreneurship, Networking और Social Responsibility से जोड़कर देखा जा सकता है। महाराजा अग्रसेन जी का संदेश आज भी उतना ही प्रभावी है— 'सिर्फ स्वयं आगे बढ़ना सफलता नहीं, बल्कि दूसरों को साथ लेकर आगे बढ़ना ही सच्ची समृद्धि है।'

लेख - सुनील बंसल (समाजसेवी)

अग्रवाल नवयुवक संघ आज से मनाएगा अग्रसेन जयंती महोत्सव

ग्वालियर। अग्रवाल नवयुवक संघ, उपनगर ग्वालियर द्वारा महाराजा अग्रसेन जयंती के उपलक्ष्य में 11 से 15 अक्टूबर तक पांच दिवसीय महाराजा अग्रसेन जयंती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। महोत्सव का शुभारंभ रविवार, 11 अक्टूबर को प्रात: 6 बजे ध्वज पूजन एवं प्रभात फेरी के साथ होगा। प्रभात फेरी घासमंडी चौराहे से प्रारंभ होकर किलागेट, हजीरा, तानसेन नगर, रमटापुरा एवं लोहमंडी होते हुए अग्रसेन भवन, हलवटखाना पहुंचेगी। महोत्सव के दौरान महिलाओं एवं बच्चों के लिए महिला कीर्तन, मेहंदी, बंदनवार निर्माण, एक मिनट गेम, महाराजा अग्रसेन सजाओ, मिस एंड मिसेज सेफ, हाउजी, बैडमिंटन प्रतियोगिता तथा महिला क्रिकेट इन साड़ी जैसे विविध कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। मंगलवार, 13 अक्टूबर को सायंकाल 5 बजे अग्रसेन जयंती चल समारोह निकाला जाएगा। यह समारोह कोटेश्वर महादेव मंदिर से प्रारंभ होकर घासमंडी एवं किलागेट होते हुए हजीरा तक पहुंचेगा। चल समारोह के दौरान अग्रसेन भवन में तपस्वियों का सम्मान, आरती एवं प्रसाद वितरण भी किया जाएगा। अग्रवाल नवयुवक संघ के अध्यक्ष विकास जैन पूर्व पार्षद, प्रमुख सलाहकार शीतल प्रसाद अग्रवाल, महामंत्री कपिल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष संगम अग्रवाल, भवन प्रबंधक विकास सिंघल ने सभी अग्रबंधुओं से उपस्थिति का अनुरोध किया है।

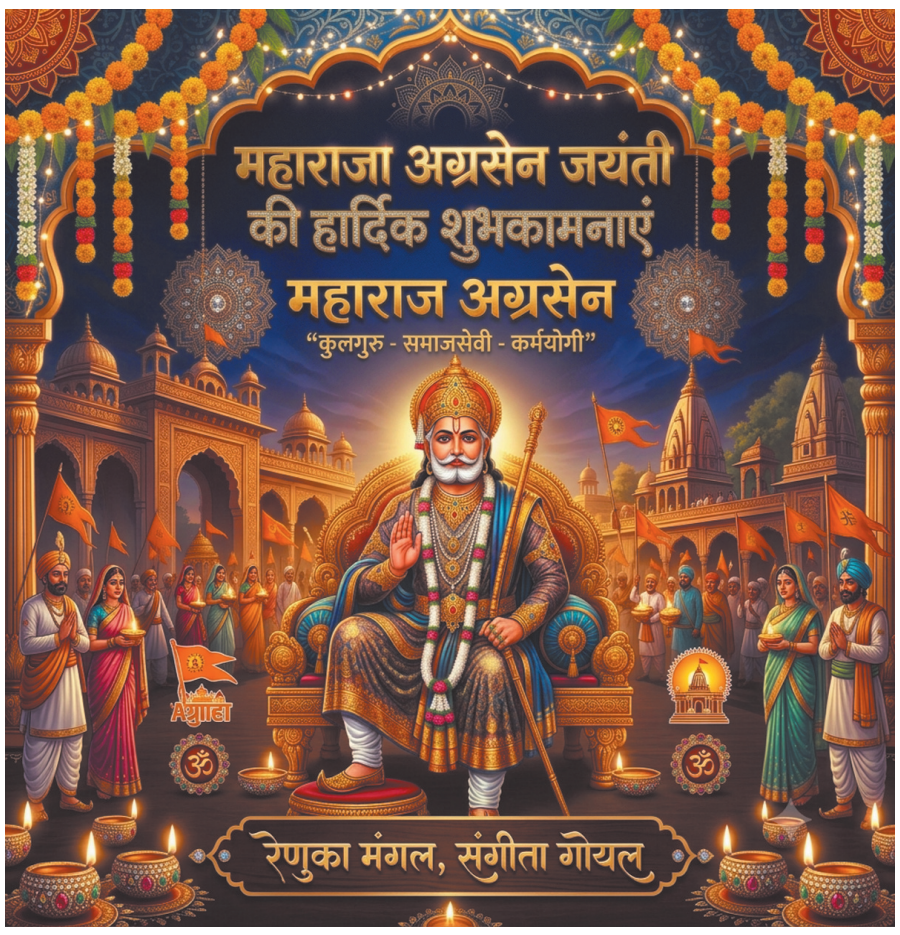

चंबल उत्सव 2026 : चंबल की संस्कृति, विरासत और प्रतिभाओं को मिलेगा नया मंच
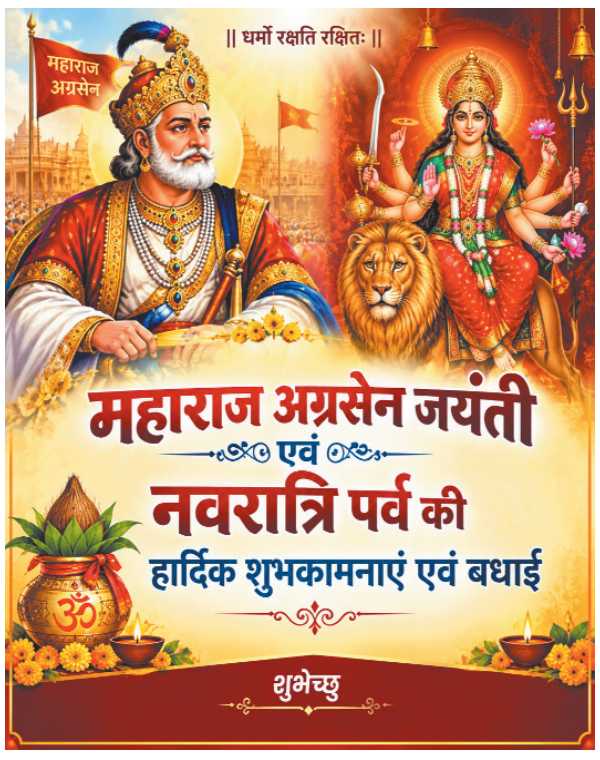
ग्वालियर. चंबल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक गौरव, लोक परंपराओं और क्षेत्र की प्रतिभाओं को एक मंच पर लाने के उद्देश्य से चंबल उत्सव 2026 का आयोजन किया जा रहा है। यह पहल चंबल की पहचान को नई दिशा देने और क्षेत्र की सकारात्मक छवि को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने का प्रयास है। चंबल उत्सव के माध्यम से क्षेत्र के इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन, सामाजिक योगदान और स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया जाएगा। इस आयोजन के अंतर्गत 'चंबल रत्न' सम्मान के माध्यम से समाज, संस्कृति और क्षेत्र के विकास में निस्वार्थ योगदान देने वाली विशिष्ट हस्तियों को सम्मानित किया जाएगा। इसके साथ ही सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सक्रिय क्रिएटर्स को प्रोत्साहित करने के लिए क्रिएटर अवॉर्ड्स की पहल की गई है। Instagram, Facebook और YouTube जैसे प्लेटफॉर्म पर चंबल की पहचान, संस्कृति, पर्यटन और सकारात्मक कहानियों को सामने लाने वाले क्रिएटर्स को अपने नामांकन प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा। आयोजकों का उद्देश्य चंबल को केवल उसके ऐतिहासिक अतीत से ही नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक समृद्धि, रचनात्मकता, पर्यटन संभावनाओं और नई पीढ़ी की उपलब्धियों से भी पहचान दिलाना है। चंबल उत्सव 2026 के माध्यम से क्षेत्र की प्रतिभाओं को सम्मान, स्थानीय संस्कृति को पहचान और चंबल की सकारात्मक कहानियों को व्यापक मंच प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है।